यो जानाति सः पण्डितः

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» प्रहेलिका विधा का परिचय – पहेलियों का उद्देश्य

» पहेली 1 – 'न तस्यादिः न तस्यान्तः' (उत्तर: नयनम्)

» पहेली 2 – 'वृक्षस्याग्रे फलं दृष्टम्' (उत्तर: अनानसः)

» जोड़-शब्द पहेली – मृत्युम् + जयः = मृत्युञ्जय

» जोड़-शब्द पहेली – कुम्भः + कर्णः = कुम्भकर्णः

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. पाठ की पंक्ति 'प्रहेलिकाः बुद्धेः तार्किकशक्तिं वर्धयन्ति' का शब्दार्थ करके बताओ यह किस बात पर बल देती है।

› 'प्रहेलिकाः' = पहेलियाँ (कर्ता)

› 'बुद्धेः तार्किकशक्तिम्' = बुद्धि की तार्किक शक्ति को

› 'वर्धयन्ति' = बढ़ाती हैं – पूरा वाक्य कहता है 'पहेलियाँ बुद्धि की तार्किक शक्ति बढ़ाती हैं'

उत्तर – यह पंक्ति बल देती है कि पहेलियाँ सुलझाने से हमारी सोचने-समझने (तार्किक) क्षमता बढ़ती है।

उदाहरण 2. पहेली के अनुसार शब्द 'नयनम्' में 'य' अक्षर कहाँ स्थित है, यह अक्षर-दर-अक्षर दिखाकर सिद्ध करो।

› 'नयनम्' शब्द को अक्षरों में तोड़ो: न-य-न-म्

› पहला अक्षर 'न' है (आदि), आखिरी अक्षर 'म्' है (अन्त)

› 'य' अक्षर बीच में है (न के बाद, दूसरे न से पहले) – यह न आदि में है न अंत में

उत्तर – 'नयनम्' में 'य' अक्षर ठीक बीच में स्थित है, न शुरुआत में न अंत में – इसलिए यह पहेली का सही उत्तर है।

उदाहरण 3. 'अकारादिं सकारान्तं' सुराग के अनुसार जाँचो कि 'अनानसः' शब्द इस शर्त को पूरा करता है या नहीं।

› 'अकारादिम्' का मतलब है शब्द 'अ' अक्षर से शुरू होना चाहिए – 'अनानसः' 'अ' से ही शुरू होता है

› 'सकारान्तम्' का मतलब है शब्द 'स' अक्षर पर खत्म होना चाहिए – 'अनानसः' में विसर्ग से पहले 'स' अक्षर आता है

› दोनों शर्तें पूरी होती हैं, इसलिए 'अनानसः' सही उत्तर है

उत्तर – 'अनानसः' शब्द 'अ' से शुरू होकर 'स' पर खत्म होता है – इसलिए यह पहेली की दोनों शर्तें पूरी करता है।

उदाहरण 4. पहेली के तीन भागों (काशी में इच्छा, युद्ध में हितकारी, सर्वदेवों में वंदनीय) को क्रम से हल करके दिखाओ कि अंतिम उत्तर 'मृत्युञ्जय' कैसे बनता है।

› पहला भाग: 'काश्यां किम् इच्छति नरः?' का उत्तर = मृत्युम् (मृत्यु/मोक्ष)

› दूसरा भाग: 'रणे भूपानां को हितः?' का उत्तर = जयः (विजय)

› दोनों उत्तरों को जोड़ो: मृत्यु + जय 'मृत्युञ्जय' (जो मृत्यु पर विजय पाए) – यही सर्वदेवों में वंदनीय शिव जी का नाम है

उत्तर – मृत्युम् + जयः = मृत्युञ्जय – भगवान शिव का नाम, जो पहेली के तीसरे सुराग 'सर्वदेवों में वंदनीय' का उत्तर है।

उदाहरण 5. 'कुम्भः' और 'कर्णः' – दोनों शब्दों के अलग-अलग सुराग बताओ और फिर दिखाओ कि जोड़ने पर कौन-सा प्रसिद्ध नाम बनता है।

› सुराग 1: 'कुलालस्य गृहे अर्धं किम्?' – कुम्हार के घर बनने वाली चीज़ का आधा नाम = 'कुम्भ' (घड़ा)

› सुराग 2: 'हस्तिनापुरे अपरम् अर्धम्?' – हस्तिनापुर (महाभारत) से जुड़ा पात्र = 'कर्ण'

› दोनों जोड़ने पर: कुम्भ + कर्ण = 'कुम्भकर्ण' – रावण का भाई, जो लंका में रहता था

उत्तर – कुम्भः (घड़ा, कुम्हार से) + कर्णः (महाभारत का पात्र, हस्तिनापुर से) = कुम्भकर्णः (रावण का भाई, लंका में)।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• 'प्रहेलिका का उद्देश्य क्या है' जैसे सवाल में तीनों लाभ (उल्लास, तार्किक शक्ति, चिंतन-क्षमता) गिनाओ – सिर्फ एक बताने से आधे नंबर मिलते हैं।

• अक्षर-स्थिति वाली पहेलियों में हमेशा संभावित उत्तर को अक्षरों में तोड़कर जाँचो कि सुराग वाला अक्षर सच में सही जगह पर है या नहीं – इससे उत्तर पक्का हो जाता है।

• फल/वस्तु पहचानने वाली पहेलियों में हर सुराग (जैसे आकार, अक्षर) को अलग-अलग जाँचकर मिलान करो, जल्दबाज़ी में पहला ख्याल आया नाम मत लिख दो।

• जोड़-शब्द पहेलियों में हर उप-प्रश्न का उत्तर पहले अलग से लिखो, फिर उन्हें जोड़कर अंतिम शब्द बनाओ – बीच का चरण दिखाने से पूरे अंक मिलते हैं।

• 'लड्कायां किम् अस्ति' जैसे अंतिम प्रश्न में सीधे जोड़ा हुआ शब्द (कुम्भकर्णः) लिखो, पर बीच के दोनों सुराग-उत्तर भी साथ में लिखना न भूलो – पूर्ण उत्तर के लिए ज़रूरी है।

एक नज़र में रिवीज़न

› प्रहेलिकाओं के तीन लाभ: मानसिक उल्लास, तार्किक शक्ति का विकास, चिंतन-क्षमता का विकास।

› पहेली 1 का उत्तर: नयनम् (आँख) – क्योंकि 'य' अक्षर शब्द के ठीक बीच में स्थित है।

› पहेली 2 का उत्तर: अनानसः (अनानास) – फल के ऊपर पेड़ जैसा दिखना + 'अ' से 'स' तक का नाम।

› मृत्युम् (काशी में इच्छा) + जयः (युद्ध में हितकारी) = मृत्युञ्जय (शिव जी, सर्वदेवों में वंदनीय)।

› कुम्भः (कुम्हार से) + कर्णः (हस्तिनापुर से) = कुम्भकर्णः (रावण का भाई, लंका में)।